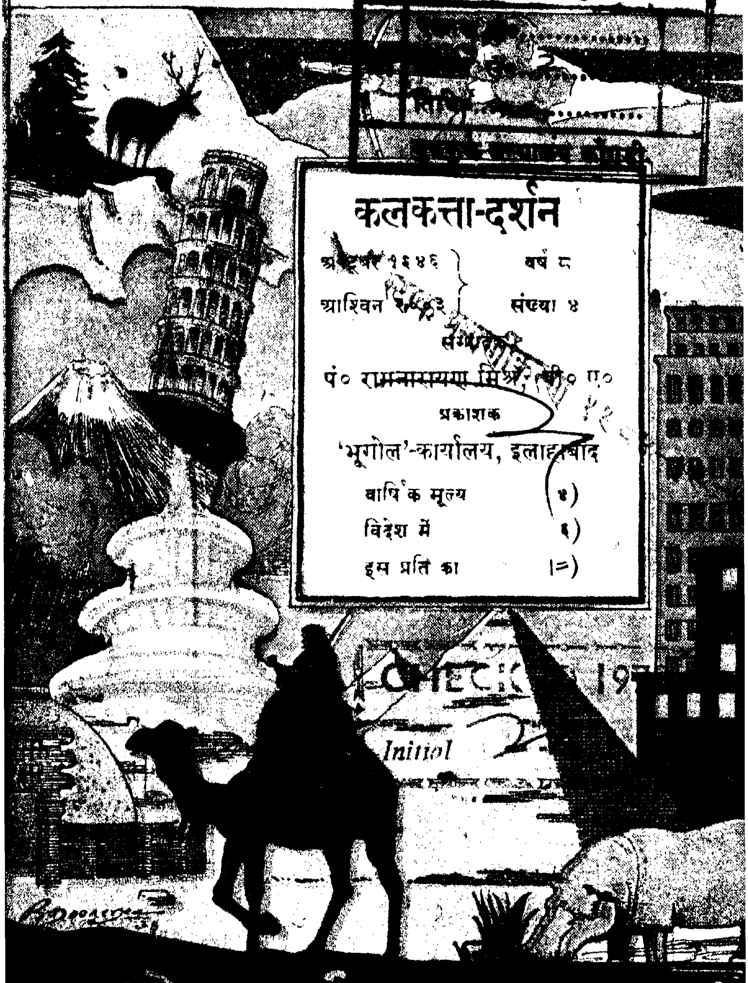
भूगोल

पूर्ण संख्या — ८२



कलकत्ता-दर्शन

अक्टूबर १९४६ — वर्ष ८
आश्विन [illegible] — संख्या ४

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
१—स्थिति, सीमा तथा विस्तार	...	१
२—लार्ड क्लाइव	...	१३
३—प्रथम गवरनर जनरल	...	१७
४—परमानेंट सेटिलमेंट	...	२०
५—उपयोगी सूचना	...	२२
६—डलहौजी स्क्वाएर	...	२४
७—काल कोठरी	...	२७
८—चुंगीघर	...	३१
९—बंगाल के सेक्रेटैरियट भवन	...	३२
१०—प्राचीन कोर्ट हाऊस	...	३३
११—डलहौजी इंस्टीट्यूट	...	३४
१२—गौरमेंट हाऊस	...	३५

स्थान

स्थिति, सीमा, तथा विस्तार

कलकत्ता नगर हुगली नदी के पूर्वी तट पर २२'३३ उत्तरी अत्तांश तथा ८८'२३ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसके उत्तर में चितपूर और दक्षिण में खिदिरपुर है। नदी के तटीय वर्ती भाग में यह साढ़े चार मील लम्बाई में फैला है। इस भाग में अनेकों नावों, स्टीमरों आदि के घाट बने हैं जहां रात दिन व्यापारिक कार्य होता रहता है। प्राचीन काल में कलकत्ता एक बहुत छोटा सा गांव था। कहते हैं कि हुगली नदी ही गंगा की प्रधान धारा थी और कलकत्ता से १०० मील दक्षिण जाकर वह समुद्र से मिल जाती थी। उसी प्रचीन काल में एक बड़ी बाढ़ आई जिससे कालीघाट की सीढ़ियों के पत्थर बह गये। काली-देवी के नाम पर ही कलकत्ता नगर का नाम पड़ा है। अब काली घाट की नदी प्रायः एक छोटे नाले के रूप में हो गई है जिसे लोग ताली का नाला कहते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह आदि गंगा के नाम से अब भी प्रसिद्ध है। सहस्रों वर्षों का समय व्यतीत हो गया होगा जब कि गंगा

जी ने अपना यह मार्ग बदल दिया और हरिंगता तथा मेघना मार्गों द्वारा समुद्र में गिरने लगीं।

अंग्रेज़ी सत्ता की नींव भारतवर्ष में तीन विभिन्न स्थानों में विभिन्न समयों में पड़ी थी। १६४० ई० में मद्रास में, १६६५ ई० में बम्बई में और १६९० ई० में कलकत्ते अंग्रेज़ी राज्य की बुनियाद पड़ी थी। अंग्रेज भारत में सर्व प्रथम व्यापारी रूप में आये थे इसलिये बम्बई तथा मद्रास द्वारा उन्होंने समुद्री व्यापार पर अधिकार जमाया और कलकत्ता द्वारा नदी मार्गों के व्यापार पर अधिकार किया। गंगा नदी के इस भाग का नाम हुगली अंग्रेजों ने रक्खा है इसका मुख्य कारण यह है कि कलकत्ता से २६ मील उत्तर की ओर हुगली नामक एक बड़ी व्यापारिक बस्ती थी उसी व्यापारिक बस्ती के नाम पर नदी का नाम भी हुगली हो गया।

जब पुर्तगाली लोग हुगली पर सोलहवीं शताब्दी के अंतिम काल में आकर बसे तो हुगली एक छोटा सा गांव था जिसके चारों ओर होगला नामक मोहनाल का वहां बन था। इसे लोग हाथी घास कहते हैं। इसी मोहनाल होगला के नाम पर गांव का और फिर नदी

का नाम हुगली पड़ा। उस काल में चिटागांग तथा सतगांव दो प्रसिद्ध व्यापारी बन्दरगाह थे। पुर्तगालियों ने इन बन्दरगाहों पर अपनी कोठियां बना ली थीं और धीरे धीरे किले बन्दी भी कर ली। शाहजहां पुर्तगालियों के कार्य से रुष्ट हो गया इसलिये उसने बंगाल के गवर्नर क़ासिमखां को आज्ञा दी कि वह पुर्तगालियों को बंगाल से निकाल बाहर करे। १६३२ ई० में पुर्तगाली निकाल बाहर किये गये और हुगली शाही बन्दरगाह बना दिया गया।

उसके पश्चात् हालैंड की डच व्यापारिक कम्पनी ने शाहजहां को प्रसन्न करके हुगली में अपनी कोठी बनाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। जब अंग्रेजों ने देखा कि डच व्यापार से खूब लाभ उठा रहे हैं तो उन्हें लालच लगी। उसी समय शाहजहां की प्यारी पुत्री जहांनारा बेगम बीमार पड़ी गेवराईल बाउटन नामक अंग्रेज सर्जन जो अंग्रेज़ी कम्पनी का नौकर था उसने अपनी चिकित्सा से जहांनारा को अच्छा कर दिया जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों को हुगली में कोठी बनाने और व्यापार करने की आज्ञा दिल्ली सम्राट से मिल गई। पहले डच तथा अंग्रेज़ी फैक्टरियाँ एक दूसरे के

अगल बगल थी पर डच फैक्टरी बाढ़ के कारण नष्ट हो गई और फिर गस्टवम नामक क़िले में स्थापित की गई।

१६८० ई० में फ्रांसीसियों ने चन्द्रनगर में अपना कारखाना खोला। उस समय मानज़ियर डेसलैंड्स फ्रांसीसी प्रधान था। वह फ्रांसीसी मार्टिन का पुत्र था जिसने १६७४ ई० में मद्रास के दक्षिण पांडेचेरी में फ्रांसीसी फैक्टरी की स्थापना की थी। १६९३ ई० में पांडेचेरी में जब डच लोगों ने अधिकार जमाया तो मार्टिन चंद्र नगर चला गया पर १६९७ ई० में सन्धि हो जाने पर वह पुनः फ्रांसीसी भारत के गवर्नर-जनरल की हैसियत से कारोमण्डल तट पर लौटा और पांडेचेरी को उसने अपनी राजधानी बनाई।

१७५५ में डूना ने बंगाल के शासक अलीवर्दी खां से सेरामपुर खरीद लिया और अपना झंडा लगाकर डेनमार्क के राजा फ्रैड्रिक पञ्चम के नाम पर नगर का नाम फ्रैड्रिक-नगर रख दिया।

कलकत्ता नगर का क्षेत्रफल ७ वर्गमील है। यहां १२० मील की सड़कें फैली हैं। बो बाजार स्ट्रीट द्वारा

नगर दो भागों में विभाजित हो जाता है। नगर समतल भूमि पर स्थित है और समुद्रतल से प्रायः १६ से १८ फुट ऊँचे धरातल पर स्थित है। सचमुच गंगा के डेल्टा की कछारी भूमि पर ही कलकत्ता नगर बसा हुआ है इसी कारण यहां बहुधा बाढ़ आया करती है। कितने भूचाल भी यहां आये हैं। जिले में भीषण तूफ़ान आया करते हैं जिनका प्रभाव नीकाबार तथा अंडमान द्वीप समूहों तक पड़ता है। मई, जून, अक्तूबर और नवम्बर मासों में तूफान आया करते हैं। कलकत्ता में तीन ऋतुएं होती हैं। नवम्बर से फरवरी तक शीत काल रहता है उसके बाद मार्च से जून तक ग्रीष्मकाल और फिर वर्षा काल आ जाता है। वर्षा ऋतु अस्वास्थप्रद होती है।

नगर में भवन तथा सरोवर बनाने के लिये जो कुछ खोदाई हुई है उससे पता चलता है कि नीचे बालू तथा मिट्टी की तहें बारी बारी से ४० फुट तक वर्तमान हैं। ४० फुट के नीचे बालू ही बालू है। २० फुट के बनस्पति पदार्थ वाली भूमि की पट्टी है। शायद यही प्राचीन धरातल रहा होगा जो समुद्र-तल से नीचे है। उससे १० फुट नीचे विभिन्न भांति की बनस्पति जो

सुन्दर बन में पाई जाती है उसके चिन्ह मिलते हैं। यह बनस्पति वाले वृक्ष जलाने की लकड़ी का काम देते हैं। कुछ लोगों का ख्याल है कि इन्हीं बनस्पतियों पर नगर का नाम करण हुआ है।

१६५५ ई० में जाबचारनाक भारतवर्ष आया और १६८५ ई० में वह बियर्ड के स्थान पर कम्पनी का एजेन्ट बनाया गया। २० दिसम्बर १६८६ ई० को अंग्रेज हुगली से हटकर सतवंती चले आये। १६८८ ई० में कैप्टन हीथ आया। १६६० ई० अंग्रेजों ने कलकत्ता में डेरा डाला था। चारनाक की मृत्यु के पश्चात् एलिस की नियुक्ति हुई। १६६६ ई० में हुगली नदी के किनारे विदेशी लोगों ने अपनी अपनी बस्तियां बसानी आरम्भ कीं।

१६६६ ई० में कम्पनी के डाइरेक्टर्स की कोर्ट ने बंगाल प्रेसीडेंसी के स्वतंत्रता की घोषणा की। १७०० ई० में चार्ल्स ईरे प्रथम प्रेसीडेंट बन कर कलकत्ता आया। ६ अक्तूबर १७०२ ई० को सेंट जार्ज के क़िले पर यूनियन जैक फहराया गया।

१७०७ ई० में औरंगज़ेब की मृत्यु हो गई और

उसके तीनों पुत्रों में राजगद्दी के लिये लड़ाई होने लगी। इस लड़ाई से देश में अशांति फैल गई जिससे विदेशियों को अपनी अपनी शक्ति बढ़ाने में बड़ी सहायता मिल गई।

१७१५ ई० में अंग्रेज़ों ने मुग़ल दरबार में अपना प्रतिनिधि दल भेजा। उस समय फरुख सियर दिल्ली का बादशाह था। जान सरमन प्रतिनिधि दल का सरदार था उसके साथ में हेमिल्टन, स्टेफेनसन और ख्वाजा सिरहात गये। अंग्रेज़ों ने बादशाह को तोहफे आदि दिये साथ ही साथ हेमिल्टन ने बादशाह की चिकित्सा किया जिससे वह प्रसन्न हो गया। बादशाह ने भी अंग्रेज़ों क इनाम दिये और व्यापार करने के लिये फरमान दिया। फरमान से अंग्रेज़ों ने लाभ उठाया और बंगाल के नवाब के विरुद्ध अपनी जमींदारी को बढ़ाना तथा क़िलेबन्दी करना आरम्भ कर दिया।

१७४० ई० में अली वर्दी खां ने बंगाल के नवाब सरफ़राज़ खां को कत्ल कर डाला और बादशाह से फरमान लेकर स्वयं नवाब बन गया। १७४२ ई० में मरहठों ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया और शीघ्रता

के साथ बाल्सोर, राजमहल, मुकवातना, होड़ा स्थानों पर अधिकार जमा लिया।

मरहठों के आक्रमण से बंगाल के व्यापारियों में भय छा गया। इसलिये अंग्रेज़ी कम्पनी ने अपनी सुरक्षा के लिये ३१ मार्च सन् १७४३ ई० को निश्चय किया कि कम्पनी भूमि के चारों ओर खाई खाद दी जाय। उन्होंने आक्रमण का सामना करने के बहाने सेना में भरती भी आरम्भ कर दी। इसी बीच अली वर्दी खां और मरहठों के बीच संधि हो गई जिससे अंग्रेज़ों को अपना काम रोक देना पड़ा।

मरहठों के आक्रमण के भय से और साथ ही साथ योरुपीय जातियों के भय से भी अंग्रेज़ों ने भारत में अपनी शक्ति को बढ़ाना आरम्भ कर दिया था। उस समय योरुप के देशों में झगड़ा हो रहा था इसलिये अंग्रेज़ों को भय था कि पता नहीं कब उन्हें फ्रांसीसियों, डच अथवा पुर्तगालियों से लड़ना पड़ जाय।

१७४६ ई० में फ्रांसीसियों ने मद्रास के सेंट जार्ज क़िले पर अधिकार कर लिया इसलिये १७४८ ई० में बंगाल की अंग्रेज़ी कम्पनी को लन्दन से

आज्ञा मिली कि कलकत्ता की शीघ्रता-शीघ्र क़िले-बन्दी करा दी जाय। और गोविंदपुर के नीचे भी एक क़िला बना दिया जाय। इङ्गलैंड से कम्पनी के संचालकों ने यह भी आज्ञा दी कि यदि बंगाल का नवाब कम्पनी के कार्य में रोक उत्पन्न करे तो कम्पनी को चाहिये कि योरुपीय जहाज़ों और नावों को छोड़कर सभी जहाज अथवा नावें हुगली में चलने से रोक दी जांय और इस प्रकार नवाब को मजबूर करके शक्ति बढ़ाई जाय। स्कार इंजीनियर को विलियम क़िले का मेजर तथा कम्पनी की सेना का कमांडर बनाकर संचालकों ने कलकत्ता भेज दिया।

अलीवर्दी खां एक योग्य शासक तथा सैनिक था। उसे अपना अधिकांश समय मरहठों से युद्ध करने में व्यतीत करना पड़ा। युद्ध समाप्त होने के पश्चात् उसने शासन ठीक करने की ओर ध्यान दिया। उस समय बंगाल के नवाबों की नियुक्ति दिल्ली से हुआ करती थी पर अलीवर्दी खां ने अपने पश्चात् अपने पुत्र मिरज़ामोहम्मद, सिराजुद्दौला को नवाब बनाने का निश्चय किया। १७५६ ई० में अलीवर्दी खां की मृत्यु हो गई और सिराजुद्दौला गद्दी पर बैठा। उस समय

उसकी आयु केवल २५ वर्ष की थी। उसे भली-भांति बंगाल की स्थिति का ज्ञान था इसलिये शीघ्रता पूर्वक उसने अपना काम सम्भालने का प्रयत्न किया।

उस समय ढाका का डिप्टी गवरनर राज बल्लभ था। वह प्रान्त का नायब (दीवान) भी था इसलिये उसने खूब धन एकत्रित कर लिया था। सिराजुद्दौला ने उसे मुर्शिदाबाद बुलाया और शासन का ब्योरा माँगा। राज बल्लभ हिसाब देने में सफल न हुआ इस-लिये उसे मुरशिदाबाद में रोक लिया गया। यह सुन कर उसका पुत्र कृष्णदास सारा धन तथा परिवार लेकर नाव द्वारा कलकत्ता भाग गया और अंग्रेज़ों के मध्य शरण ली। ड्रेक नामक अंग्रेज़ उस समय कलकत्ता का गवरनर था। उसने फूट डालने का अच्छा मौक़ा देखा इसलिये कृष्णदास को सहायता देने का वचन दे दिया। इसी बीच सिराजुद्दौला को अंग्रेज़ों की चाल का पता चला तो उसने आज्ञा भेजी कि क़िलेबन्दी रोक दी जाय और १५ दिन के भीतर पेरिंसरिडाउट तथा ड्रा पुल नष्ट कर दिये जांय और मरहठा खांई पाट दी जाय।

अंग्रेज़ों को तो लड़ाई मोल लेनी थी ही उन्होंने

नवाब की आज्ञा का उल्लंघन किया। इस पर नवाब ने अपने सेनापति राव दुर्लभ को आज्ञा दी कि २३ मई को अंग्रेज़ों की क़ासिमबाज़ार के कारख़ाने का घेरा डाल दे। घेरा डाल दिया गया और मिस्टर वार अंग्रेज एजेन्ट और उसकी कौंसिल के सदस्य पकड़ कर मुरशिदाबाद भेज दिये गये। क़ैदी लोगों में वारनहेस्टिंग्ज़ भी था जिसकी आयु उस समय २४ वर्ष की थी। वह उस समय मुंशी का काम करता था।

नवाब की सेना पुर्निया की ओर जा रही थी पर उसने अपना मार्ग कलकत्ते की ओर बदल दिया क्योंकि कलकत्ता से जो समाचार मिले वह नवाब की शान के बिल्कुल विरुद्ध थे। नवाब की सेना ने कलकत्ता पर आक्रमण किया और विजय कर लिया इसके पश्चात् २ जनवरी सन् १७५७ ई० को वारसन तथा क्लाइव की संरक्षता में अंग्रेज़ों ने पुनह फोर्टविलियम पर अधिकार कर लिया उसके बाद हुगली नगर पर अंग्रेज़ों ने अधिकार जमाया।

इसके बाद पलासी का युद्ध हुआ जिसमें नवाब सिराजुद्दौला को परास्त खानी पड़ी। इसका कारण यह था कि नवाब के सेना नायक मीर जाफर को अंग्रेज़ों

ने अपनी ओर मिला लिया। लड़ाई के मैदान में मीर-जाफर की सेना अंग्रेज़ों की ओर होकर नवाब की सेना को मारने लगी था। सिराजुद्दौला पकड़ लिया गया और उसे मीर जाफर के पुत्र मीरन ने राजमहल में मार डाला। मीर जाफर को अंग्रेज़ों ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा का नवाब बनाया।

मीर जाफर तो नाम के लिये नवाब था। प्लासी के युद्ध के पश्चात् बंगाल पर अंग्रेज़ों का पूर्ण अधिकार हो गया और उनका सामना करनेवाला कोई भी न रह गया। १७५८ ई० में सुलतान मोहम्मद गौर दिल्ली सम्राट ने पटना पर आक्रमण किया पर क्लाइव की सेना के पहुँचने के पहले ही वह लौट पड़ा।

क्लाइव के इङ्गलैंड चले जाने पर वान्सिटार्ट ने मीरजाफर के स्थान पर उसके दामाद मीर क़ासिम को नवाब बनाया। मीर कासिम अच्छा आदमी था उसने अंग्रेज़ों की चाल समझ ली इसलिये उससे अंग्रेज़ों से नहीं पटी परिणाम यह हुआ कि उसने मुरशिदाबाद से अपनी राजधानी हटाकर मुंगेर में कर लिया। मीर कासिम ने पटना पर अधिकार कर लिया और अंग्रेज़

अफसरों को कैद कर लिया। इस पर अंग्रेज़ों ने मीर कासिम की जगह फिर मीर जाफर को नवाब बना दिया और कटवा स्थान पर मीर क़ासिम की सेना को परास्त किया।

मीर क़ासिम ने अपनी शक्ति संचित करके पटना पर आक्रमण किया। इसी बीच अंग्रेज़ों के कथनानुसार पटने का हत्याकांड हुआ। बक्सर का युद्ध १७६४ ई० में जिसमें अंग्रेज़ों की विजय हुई।

१२ अगस्त सन् १७६५ ई० को इलाहाबाद के क़िले में अंग्रेज़ों और भारतियों में संधि की गई। इस संधि के अनुसार शाहआलम ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी लार्ड क्लाइव को सौंप दी। अंग्रेज़ों ने इसके बदले में शाहआलम को २० लाख सालाना देने का वचन दिया। मीरजाफर के मरने पर उसका पुत्र नज्जमुद्दौला बालपन ही में नवाब बनाया गया।

लार्ड क्लाइव

मई सन् १७६५ ई० में क्लाइव बंगाल का गवरनर तथा प्रधान सेनापति बनाकर भेजा गया। क्लाइव ने

आते ही इलाहाबाद की संधि की उसके पश्चात् उसने देखा कि सभी अंग्रेज़ अपना अपना निजी व्यवसाय कर रहे हैं जिससे कम्पनी को घाटा लग रहा है पर व्यापारी लोग अधिक से अधिक लाभ उठा रहे हैं। रिशवत का भी बाज़ार गरम था। कम्पनी के सभी नौकर रुपया जमा करने पर तत्पर थे। क्लाइव ने स्वयम लिखा है कि बंगाल में मुश्किल से पांच व्यक्ति ईमानदार होंगे। उदाहरण के रूप में गवरनर का दीवान रामचन्द्र और नाब कृष्ण (कम्पनी का दुभाषिया या एजेंट) दोनों कम्पनी की ओर से ६०) मासिक वेतन पाते थे। रामचन्द्र एक करोड़ १५ लाख छोड़ कर मरा था और नाब कृष्ण ने अपनी माता के मृतक संस्कार में ६ लाख रुपया खर्च किया था। क्लाइव ने सोचा कि चूंकि कम्पनी वेतन कम देती है इसी कारण यह खराबियां हैं इसलिये उसने कम्पनी के नौकरों को नमक, सुपाड़ी, और पान का व्यापार सुरक्षित कर दिया। इसके व्यापार से जो लाभ होता था वह नौकरों में विभाजित कर लिया जाता था।

कलकत्ता-दर्शन

सामाजिक दशा

अठारहवीं शताब्दी में कलकत्ता के निवासी साधारणतारूप से बड़े प्रातःकाल उठ जाते थे और फिर वायुसेवन के लिये बाहर टहलने चले जाते थे। ग्रीष्म काल में दफ़्तरों का समय ६ बजे सबेरे से दोपहर तक होता था। शीत काल में सिविलियन लोग १० बजे दिन से डेढ़ बजे दिन तक और फिर साढ़े सात बजे संध्या से ६ बजे संध्या तक काम किया करते थे। जब इङ्गलैंड से जहाज़ जाते थे तो काम बहुत बढ़ जाता था और तभी सभी लोग व्यस्त तथा कर्मशील दिखाई पड़ते थे। दोपहर का भोजन लगभग दो बजे खाया जाता था। मदिरा का प्रयोग अधिक होता था। प्रत्येक मनुष्य औसत से प्रतिदिन चार बोतल शराब पीता था। स्त्रियां दिन भर में एक बोतल शराब पीती थीं। मध्य श्रेणी, उच्च श्रेणी तथा दफ़्तरों के काम करने वालों की कुर्सियों के पीछे एक नौकर पंखा झलने का काम करता था। बग़ल में सुन्दर तम्बाकू की सुन्दर जड़ाऊ फरसी दिन भर लगी रहती थी। बहुमूल्य तथा सुगंधित तम्बाकू के प्रभाव से प्रभावित होकर लोग मस्त हो जाते थे और अपना सभी कष्ट भूल जाते थे।

चार बजे से पांच बजे संध्या तक सभी लोग आराम करते तथा सोते थे। उसके पश्चात् संध्या को हवाखोरी के लिये जाते थे। स्त्रियां अपनी फिटिन स्वयं हांका करती थीं सेवक पिछले भाग में बैठा करता था। उच्च श्रेणी के लोग चार घोड़े वाली गाड़ी पर चलते थे और उनके ऊपर सुन्दर छतरी लगी होती थी। अमीर तथा रईस लोग पालकी पर हवाखोरी करते थे।

वायुसेवन के पश्चात् चाय, क़हवा आदि पीने का काम होता था। दस बजे रात को लोग भोजन किया करते थे। यदि किसी से हैट रख देने को कहा जाता तो उसका अर्थ उसे भोजन करने का निमंत्रण देने का होता था। भोजन के पश्चात् नाच-गान होता था। नाच-गान में काफी समय तथा धन व्यय किया जाता था। ताश, लूप, चौपड़, जुआ आदि लोग बहुत खेलते थे। जुये का रिवाज बहुत अधिक था। अंग्रेज़ लोगों के मध्य 'डोयल' का रिवाज बहुत था। डोयल यह एक प्रकार का दो मनुष्यों के मध्य युद्ध होता था जिसके द्वारा वे अपना आपसी झगड़ा तय करते थे। इसमें बहुत से लोग जान से भी मार डाले जाते थे।

नदी की सैर के लिये रईस तथा उच्च पदाधिकारी लोग सुन्दर नौकाएँ तथा बजरे रखते थे। यह बजरे साने, चांदी, मखमल, रेशम आदि से सजे रहते थे। नाविक तथा सेवकों की भी पोशाकें बड़ी सुन्दर होती थीं लार्ड वेलेज़ली का बजरा बड़ा सुन्दर तड़क-भड़क वाला था।

प्रथम गवरनर जनरल

जब १७६५ ई० में अंग्रेजों को तीन प्रांतों की दीवानी दी गई तो वे शासन पद्धति से बिलकुल अनभिज्ञ थे। अंग्रेज़ व्यापारी थे उन्हें राजनीति का ज्ञान बिलकुल नहीं था इसलिये भूमि कर के बारे में वह कुछ भी सोच विचार नहीं कर सकते थे इसलिये उन्होंने मुसलमानों की भांति इसका भार हिन्दुओं पर ही डाल दिया। राजा सेता भाई बिहार के दीवान बनाए गये थे। मुर्शिदाबाद खज़ाने का केन्द्र था और वहीं सब रुपया जमा होता था। कलकत्ते के कुप्रबन्ध के कारण कम्पनी पर ऋण हो गया था। ऐसी जटिल स्थिति में १३ अप्रैल सन् १७७२ ई० को वारनहेसटिंग्ज़ ने कार्य

भार सँभाला उसके पश्चात् कम्पनी की कौंसिल ने कर विभाग को अपने हाथ में ले लिया और मुर्शिदाबाद से खज़ाने को हटा कर कलकत्ते में स्थापित किया। कौंसिल ने भारतीयों के स्थान पर योरुपीय लोगों को कर वसूल करने के लिये नियुक्त किया यह लोग कलक्टर कहलाते थे। कौंसिल के चार सदस्य परमानेंट सेटिलमेंट की स्थापना करने के ध्यान से देश का भ्रमण करने लगे। ज़मीदारी नीलाम की जाने लगीं और जब ठीकेदार आय न चुका सकता था तो उसके स्थान पर दूसरा व्यक्ति रख दिया जाता था। प्रत्येक ज़िले में दो क़ानूनी अदालतें स्थापित की गईं। एक सिविल के और दूसरी अपराध सम्बन्धी मामलों के मुक़द्में करती थी। ये अदालतें कलक्टर के आधीन थीं।

जब कि ये परिवर्तन भारत में हो रहे थे लन्दन में कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स ने इंगलैंड के मंत्री मंडल से धन की सहायता मांगी। इस पर कामंस सभा ने कम्पनी की स्थिति की जांच करने के लिये एक कमेटी नियुक्त की। कमेटी के आदेशानुसार विलियम के क़िले का गवरनर कम्पनी की भूमि का गवरनर जनरल बना दिया गया

उसे मद्रास और बम्बई प्रेसीडेंसियों पर भी अधिकार दे दिया गया। एक सुप्रीम कौंसिल की स्थापना की गई जिसमें गवरनर जनरल के अतिरिक्त चार और सदस्य रक्खे गये। कौंसिल के सभी सदस्यों तथा जजों को निजी व्यापार करने की मनाही करदी गई। कम्पनी के नौकरों को रिश्वत तथा तुहफ़ा आदि लेने से पूरी तौर पर मनाही कर दी गई।

कलकत्ता में एक बड़ी अदालत स्थापित की गई जिसमें एक प्रधान जज तथा तीन दूसरे जजों की नियुक्ति हुई। यह सभी परिवर्तन पारलियामेंट में पास किये गये। सर्व प्रथम पारलियामेंट एक्ट के अनुसार हुये थे। यह क़ानून पहली अगस्त १७७४ ई० को भारत में लागू किया गया था।

वारनहेसटिंग्ज़ ५ वर्ष के लिये गवरनर जनरल बनाया गया उसकी शक्ति पर रोक लगाने के लिये कौंसिल के सभी सदस्यों को उसी के बराबर मताधिकार प्रदान कर दिया गया। एक्ट के अनुसार जो चार सदस्य नियुक्त हुये थे उनमें से बारवेल ही केवल एक ऐसा व्यक्ति था

जिसको भारत के सम्बन्ध में थोड़ा ज्ञान था शेष सभी सदस्य सर्वथा अनभिज्ञ थे।

परमानेंट सेटिलमेंट

वारनहेसटिंग्ज़ और उसकी कौंसिल के सदस्यों के मध्य घोर विरोध होने के कारण १७८६ ई० में मारक्वीस कार्नेवालिस गवरनर जनरल बनाया गया। कार्नेवालिस टेपूसुल्तान के राज्य पर धावा मारा और धन तथा भूमि की वृद्धि की। बिहार और बंगाल में परमानेंट सेटिलमेंट की स्थापना हुई। इस नियम के अनुसार भूमि के ठीकेदार भूमिपति बना दिये गये और सरकारी घोषणा के अनुसार बंगाल तथा बिहार का भूमिकर सदैव के लिये (३,८०,८६,१५० रु०) नियत कर दिया गया। बनारस का भूमिकर ४० लाख ६ सौ पंद्रह रुपया सालाना नियत किया गया।

१८ मई सन् १७९८ ई० को मारक्वीस वेलेज़ली कारनेवालिस के स्थान पर गवरनर जनरल बनाया गया। ४ मई सन् १७९९ ई० को वेलेज़ली ने टीपू सुल्तान की

राजधानी श्रंगापट्टम पर धावा मारा। टीपू मारा गया और राज्य पर अधिकार कर लिया गया। इसी के समय में सींधिया तथा होल्कर मरहठा सरदारों से भी अंग्रेजों की लड़ाइयां हुईं। दिल्ली पर अंग्रेज़ी अधिकार हो गया और मुग़ल सम्राट को ५० हज़ार सालाना की पेंशन दी गई। कलकत्ते का सरकारी भवन जो बाद में वाइसराय का निवास स्थान बनाया था इसी काल में बनवाया गया।

१८१७ ई० के पश्चात् लाटरी (चिट्ठा) कमेटी द्वारा एकत्रित धन के अनुसार कलकत्ता नगर में सड़कों, गलियों, मैदानों और पार्कों आदि का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ।

इसी प्रकार धीरे धीरे अंग्रेज़ों ने भारत वर्ष पर अपना सिक्का जमा लिया। १८५७ ई० में भारतीयों ने सर्व प्रथम स्वतंत्रता का गौरवपूर्ण युद्ध आरम्भ किया पर उन्हें असफलता हुई और १८५८ ई० में महारानी विक्टोरिया ने कम्पनी के हाथ से भारत का शासनसूत्र अपने हाथ में ले लिया इस प्रकार का शासन काल समाप्त हो गया। १८५८ ई० में कलकत्ता दिल्ली के

स्थान पर भारतवर्ष की राजधानी बनाया गया और १९११ ई० तक भारत की राजधानी बना रहा।

उपयोगी सूचना

विदेशी यात्री कलकत्ता नगर तक स्टीमर द्वारा आते हैं और स्ट्रैंडरोड के घाटों पर उतरते हैं। अधिकांश विदेशी सामान से लदे हुये जहाज़ खिदिरपुर डाक पर उतारे जाते हैं। जहाज से उतरे हुये लोगों को घाटों पर टैक्सी मोटरगाड़ियां, बसें, घोड़ा गाड़ियाँ, बैल-गाड़ियां आदि नगर की ओर ले जाने के लिये प्रस्तुत रहती हैं। रिक्शा भी उपलब्ध होते हैं।

ईस्ट इंडियन रेलवे तथा बंगाल नागपुर लाइन से आने वाले यात्री हावड़ा स्टेशन पर उतरते हैं। हावड़ा स्टेशन कलकत्ता नगर के ठीक उत्तर की ओर स्थित है। यह हुगली नदी द्वारा कलकत्ता से अलग हो जाता है। हावड़ा और कलकत्ता हावड़ा नामक पुल द्वारा मिला दिये गये हैं। यह पुल १५८८ फुट लम्बा है। पहला पुल सर्व प्रथम १८७४ ई० में बना था। पूर्वी बंगाल से आने

वाले लोग सियालदा स्टेशन पर उतरते हैं। यह सरकुलर रोड के कुछ पूर्व स्थित है। यहाँ से शिलांग तथा दारजिलिंग को रेलवे लाइनें जाती हैं।

कलकत्ता पुलीस कमिश्नर का दफ़्तर लाल बाज़ार स्ट्रीट पर स्थित है यह डलहौज़ी स्क्वायर के उत्तर-पूर्वी कोने पर स्थित है।

कलकत्ता के पास पड़ोस की सैर नावों तथा स्टीमरों द्वारा भली भाँति की जा सकती है। नावों तथा स्टीमरों का प्रबन्ध पोर्ट कमिश्नर के अधिकार में है। चांपडाल घाट, खिदिरपुर, टेलकाल घाट, रामकृष्णपुर, सिबपुर और शालिमार आदि स्थानों के मध्य स्टीमर चला करते हैं। कलकत्ता के ऊपर तथा नीचे निजी व्यापारी लोगों के स्टीमर तथा नावें चला करती हैं।

नगर का काम १० बजे दिन से आरम्भ होता है इसके पहले दफ़्तर तथा दुकाने आदि बन्द रहती हैं साढ़े दस बजे रात को सवारियाँ चलनी बन्द हो जाती हैं।

———

डलहौज़ी स्क्वाएर

डलहौज़ी स्क्वाएर का साधारण लोग लालडिग्गी के नाम से पुकारते हैं। लालडिग्गी का अर्थ लाल सरोवर का है क्योंकि यहाँ मध्य में एक प्राचीन सरोवर है। इसे लाल बाग भी कहते हैं।

डलहौज़ी स्क्वाएर को हम कलकत्ता का हृदय कह सकते हैं। इस सड़क का नाम लार्ड डलहौज़ी के नाम पर डलहौज़ी स्क्वाएर रक्खा गया है। डलहौज़ी स्क्वाएर के चारों ओर मुख्य सरकारी भवन, दफ़्तर तथा नगर के मुख्य व्यापारी भवन स्थित हैं। यहां की भूमि का प्रत्येक अंगुल स्थान एतिहासिक है। यहीं पर सर जाबचारनाक तथा उसके साथियों ने सर्व प्रथम अपनी बस्तियां बनाई थीं। तालाब से वह लोग पीने के लिये जल प्राप्त किया करते थे। सरोवर के तट पर जो कचेहरी ज़मींदारों ने बनाई थी उसी में अंग्रेज़ों के कागज़ात रक्खे जाते थे। इसी से मिला हुआ एक प्राचीन हिन्दू मन्दिर है।

यहीं पर बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिल भवन तथा

सेंट एन का गिरजाघर है। यद्यपि वर्तमान अवस्था में यहां की भूमि प्राचीन कालीन एतिहासिक घटनाओं का वर्णन करने में संकोच बद्ध है फिर भी यहीं अनेकों घटनाएँ घटीं तथा युद्ध हुये। उस समय की घटनाओं की स्मृतियां अवशेष नहीं रह गई हैं। इसके केन्द्रीय भाग में एक सुन्दर वाटिका है। वाटिका के भीतर, घास के मैदान, पुष्प वाटिकाएँ, मार्ग, वृक्षों की पंक्तियां आदि हैं। वाटिका में अंग्रेज गवरनर जनरलों तथा दूसरे व्यक्तियों की मूर्तियां तथा स्मारक बने हैं। यहीं गाल्सवर्थी ग्रांट का स्मारक है। गाल्सवर्थी ने कलकत्ता के पशुओं पर किये जाने वाले अत्याचार निवारक संस्था की स्थापना की थी।

यदि इस स्थान के भवनों तथा स्थानों का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त किया जाय तो पता चलेगा कि इस स्थान का महत्व भारतीय इतिहास में कितना महत्व रखता है।

देश दर्शन

विलियम का क़िला

अंग्रेज जब बंगाल में आये और अपनी बस्तियाँ बनानी आरम्भ कीं तो उन्हें अपने कारखानों का बनाना आवश्यक था साथ ही साथ कारखानों की रक्षा भी आवश्यक थी। इसलिये १६९३ ई० में सरजान गाल्डसबरों ने एक प्राचीन क़िले की दीवारों का पता लगाया और कलकत्ते में एक क़िला बनाना चाहा पर वह न बना पाया। १६९६ ई० में राजकुमार अज़ीमुश्शान (बंगाल) ने अंग्रेज व्यापारियों को एक फरमान द्वारा सतनूता, कलकत्ता और गोविंदपुर का ज़मींदार स्वीकार कर लिया। इसलिये अंग्रेज़ों ने कलकत्ते में क़िला बनाना आरम्भ किया।

जब १६९९ ई० में बंगाल प्रेसीडेंसी की मद्रास प्रेसीडेंसी से अलग होने की घोषणा की गई तो क़िले का नाम सम्राट के नाम पर विलियम फोर्ट रक्खा गया। क़िले के बनाने में अंग्रेज़ों को बंगाल के नवाब तथा दिल्ली सम्राट औरंगज़ेब की आज्ञाओं का भी ध्यान रखना था अतएव बनाने में बहुत विलम्ब लगा फिर

भी वह धीरे धीरे चालशाजी के साथ अपना काम करते रहे। १७०७ ई० में सम्राट औरंगज़ेब की मृत्यु हो गई तो निर्माण कार्य ज़ोरों पर चला और १७१६ ई० में अपनी वेब्स्टर, रसेल और रावर्ट हेजेज़ की देख रेख में क़िला तयार हुआ।

क़िले के भीतर ही फैक्टरी बनाई गई। कम्पनी के अफसरों तथा दूसरे नौकरों के रहने का प्रबन्ध क़िले में किया गया। फौज़ भी रक्खी गई जिससे किसी प्रकार का भय न रहे। गवरनर जनरल भी क़िले में ही रहते थे।

क़िले की उत्तरी भुजा ३४० फुट, दक्षिणी १८५ फुट और पूर्वी तथा पश्चिमी ७१० फुट हैं।

काल कोठरी

विलियम क़िले के पूर्वी द्वार के मेहराबों में दो कोठरियां सैनिक अफसरों के सोने के हेतु बनाई गई थीं। कहा जाता है कि इन्हीं में से एक कोठरी जिसकी लम्बाई १८ फुट, चौ० १४ फुट थी काल कोठरी की दुर्घटना घटी थी।

इस दुर्घटना का वर्णन अंग्रेज इतिहासकारों ने हालवेल नाम अंग्रेज सैनिक अफसर के वर्णन के अनुसार लिखा है और उसे सत्य सिद्ध करने का प्रयत्न किया है पर हमारे भारतीय इतिहास लेखकों ने इसका तीव्र खंडन किया है और लिखा है कि कालकोठरी की घटना हालवेल कपोल कल्पित है और इसमें किञ्चित मात्र भी सत्य नहीं है।

कल्पित होने के मुख्य कारण हमारे सामने हैं। ७ जून सन् १७५६ ई० को सिराजुद्दौला की सेना किले की ओर बढ़ी उसका समाचार पाते ही अंग्रेजों ने सामना करने के लिये प्रबंध किया और सेंट ऐंड्रू के समीप तोपें लगवा दीं। दूसरी रक्षक सेना हेस्टिंग्ज गली, कौंसिल भवनगली तथा गोरमेंट गली के चौरास्ते वाले मैदान में लगाई गई और तीसरी रक्षक सेना क्लाइव घाट गली के तट पर लगाई गई। एक सेना मरहठा खाई पर लगाई गई। कहा जाता है कि कुल मिला कर किले में केवल ५१५ व्यक्ति थे।

इन लोगों ने १८ ता० तक नवाब की ५० हजार सेना का सामना किया। १९ ता० को प्रेसीडेंट ड्रेक,

कैप्टन मिंचिन किले का कमांडर, कैप्टन ग्रांट तथा लैफ्टिनेंट ओहादा जहाजी बेड़ा लेकर चले गये उसके पश्चात् हालवेल सेनापति चुना गया।

हालवेल साहब इतने बहादुर सिद्ध हुये कि उन्हीं के वर्णन के अनुसार नवाब की ओर से संधि का संकेत २० ता० को ४ बजे संध्या के समय किया गया। हालवेल साहब ने अपनी तलवार को केवल नवाब के हाथों में सौंपने का साहस किया। हालवेल कहते हैं कि कोठरी में १४६ आदमी बंद किये गये थे जिसमें से दूसरे दिन केवल २३ व्यक्ति जिंदा निकले।

पहले तो यदि संधि संकेत नवाब की ओर से हुआ था तो हालवेल साहब से तलवार लेने का प्रश्न ही न उठना चाहिये। दूसरे यदि ऐसा हुआ भी तो कोठरी में बन्द करने का सवाल कैसे उत्पन्न हुआ जब कि सारा किला खाली था तो सैनिक अफसरों के कमरे में ही बंद करने का ठिकाना था। फिर १४६ व्यक्ति किस प्रकार भरे जा सकते हैं। अन्न का ढेर तो था नहीं कि ठोंस ठोंस कर भर दिया जाय। हालवेल कहता है कि नवाब को इस घटना का पता नहीं था उसके सैनिकों

ने ऐसा किया था हालवेल ने नवाब की दोहाई दी थी तो किसी सैनिक ने कहा था "नवाब साहब सो रहे हैं उन्हें जगाया नहीं जा सकता।"

१४६ आदमियों का शोर इतना हो सकता था कि किला गूंज उठता और नवाब जाग उठता। पर लोगों ने शोर नहीं मचाया। क्यों?

फिर हालवेल साहब घटना का वर्णन करने के लिये बच गये और दूसरे मर गये। तीसरे जो तेईस आदमी बचे थे उनमें से किसी ने भी इस घटना का वर्णन नहीं किया। हालवेल ने ६ मास पश्चात् जब किला दुबारा जीता गया तो वर्णन किया।

विलियम किले के किसी भी सैनिक अधिकारी ने अपने किसी भी निजी पत्र में इसका वर्णन नहीं किया है। हालवेल ने भी ६ मास तक जो निजी पत्र लिखे थे उसमें इसका वर्णन नहीं है।

इस प्रकार यह सिद्ध है कि यह घटना कल्पित है और द्वेष भाव उत्पन्न करने के लिये तथा अंग्रेज़ों को अधिक कुपित करने के लिये ही यह रचना की गई।

अब इस कोठरी तथा घटना की स्मृति में डलहौजी

स्क्वाएर के उत्तरी-पश्चिमी कोण पर कलक्टरेट के सामने बना दी गई है। मरे हुये लोगों के नाम संगमर-मर के पत्थर पर अंकित कर दिये गये हैं।

हालवेल की स्मृति को लार्ड कर्ज़न ने पुनः जीवित किया और वर्तमान स्मृति का उद्घाटन १६ दिसम्बर १६०२ में किया था।

काल कोठरी का स्थान जनरल पोस्ट आफिस के उत्तर में है। डलहौज़ी स्क्वाएर से लोहे के फाटक द्वारा जो मार्ग आता है उसी पर लोहे के छड़ों से घिरा हुआ एक स्थान बना है। हालवेल ने अपनी स्मृति में बन्द किये गये व्यक्तियों के नाम, मरे हुए के नाम और दूसरी घटनाओं का वर्णन किया है।

चुंगीघर

कलकत्ता के वर्तमान चुंगी घर (कस्टम हाउस) की नींव लार्ड हेस्टिंग्ज ने ६ फरवरी सन् १८१६ ई० को डाली थी। यह डलहौज़ी स्क्वाएर के उत्तरी-पश्चिमी कोण पर सफेद भवन दो तल्ले मंजिले में स्थित है। इसका विशाल मैदान उत्तर की ओर है जिसमें प्रवेश

करने के लिये लोह द्वार क्लाइव स्ट्रीट के सामने लगा है। मैदान में घटना की स्मृति सूचक कई एक शिलाएं गड़ी हैं जिनमें शिलालेख अंकित हैं।

चारनाक स्थान

क्वायला घार गली के कोण पर जनरल पोस्ट आफिस से क्लाइव गली तक डलहौज़ी स्क्वाएर के पश्चिमी भाग को चारनाक स्थान के नाम से पुकारते हैं।

बंगाल के सेक्रेटैरियट भवन

डलहौज़ी स्क्वाएर के उत्तर क्लाइव गली से क्योन्स रेंज तक तीन तल्ले भवन में बंगाल का सेक्रेटैरियट आफिस स्थित है। इस भवन का प्राचीन नाम 'लेखकों का भवन' (राइटर्स बिल्डिंग) था। यहां केन्द्रीय द्वार पर बृटैनिया की मूर्ति स्थापित है। सेक्रेटैरियट भवन की छत पर विज्ञान, कृषि, वाणिज्य तथा न्याय की मूर्तियों के चार ग्रूप बने हैं।

कलकत्ता-दर्शन

यही डलहौज़ी स्क्वाएर के उत्तरी-पूर्वी कोण पर ल्योन्स रेंज और लाल बाज़ार के मध्य सेंट एंड्रूज का चर्च है। यहाँ पर लेडी हेस्टिंग्ज प्रार्थना करने आया करती थी इसी से इसको लोग "लाट साहब की गिरजा" भी कहते हैं।

प्राचीन कोर्ट हाऊस

वर्तमान सेंट एंड्रूज चर्च के स्थान पर ही पहले कचहरी भवन था जिसमें नन्दकुमार का प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुक़द्मा हुआ था।

कहते हैं कि जब लार्ड हेस्टिंग्ज गवरनर जनरल होकर आया तो नन्दकुमार ने उसके ऊपर साढ़े तीन लाख रु० की रिश्वत लेने का मुक़द्मा चलाया। यह रिश्वत हेस्टिंग्ज ने मुन्नी बेगम से लिया था। इस कारण हेस्टिंग्ज नन्दकुमार से बहुत क्रुद्ध हो गया अतः उसने नन्दकुमार के ऊपर अपने विरुद्ध षणयंत्र करने का अभियोग लगाया और कमाल उद्दीन को मिलाकर नन्दकुमार पर धावा कराया कि उसने व्यापारी के नाम पर जाली दस्तावेज़ लिखा है। नन्द कुमार का

प्रसिद्ध मुक़दमा ८ जून सन् १७७५ ई० को आरम्भ हुआ और उसे फांसी की सज़ा दी गई। विक्टोरिया मेमोरियल भवन के स्थान पर ३ अगस्त १७७५ ई० को नन्दकुमार को एक लाख भारतीयों के मध्य फांसी दे दी गई।

इसी भवन में फ्रांसिस के विरुद्ध भी मुक़दमा चला था और उसे पचास हज़ार जुरमाना हुआ था। फ्रांसिस गवरनर-जनरल की कौंसिल का सदस्य था। उससे नन्दकुमार से मित्रता था। फ्रांसिस के ऊपर ग्रैंड नामक व्यक्ति की स्त्री के बहकाने तथा भगाने का अभियोग लगाया गया था मुक़दमे के पश्चात् उसको ग्रैंड ने तिलाक़ दे दिया और फिर उस स्त्री ने ४० वर्ष की आयु में टालीरैंड के साथ विवाह किया। टालीरैंड नैपोलियन का प्रसिद्ध वैदेशिक मन्त्री था।

डलहौज़ी इंस्टीट्यूट

डलहौज़ी स्क्वाएर के प्राचीन कोर्ट हाऊस गली से हेअर स्ट्रीट तक वाले भाग में पोस्ट, टेलीग्राफ और डेडलेटर तथा और दूसरे दफ्तर हैं। बाज़ार के उत्तर

यहीं पर डलहौज़ी इंस्टीट्यूट भवन है। यहीं सीढ़ियों पर मारक्वीस हेस्टिंग्ज़ की सफेद संगमरमर की मूर्ति है। इस भवन का विशाल सुन्दर हाल ६० फुट लम्बा और ४५ फुट चौड़ा है।

डलहौज़ी इंस्टीट्यूट के दक्षिण-पूर्व मार्ग की दूसरी ओर स्टैंडर्ड बीमा कम्पनी का भवन है। यहीं पर भूतपूर्व राजा दरभंगा की एक सुन्दर मूर्ति है।

डलहौज़ी स्क्वायर के दक्षिणी-पश्चिमी कोण से स्ट्रैंड तक हेअर स्ट्रीट का सुन्दर बाज़ार है। इस गली के दक्षिण-पश्चिम कोण पर इम्पीरियल लाइब्रेरी है। इस पुस्तकालय में प्राचीन तथा सरकारी बड़ी बड़ी पुस्तकें हैं। यह पुस्तकालय दस बजे सवेरे से सात बजे संध्या तक खुला रहता है।

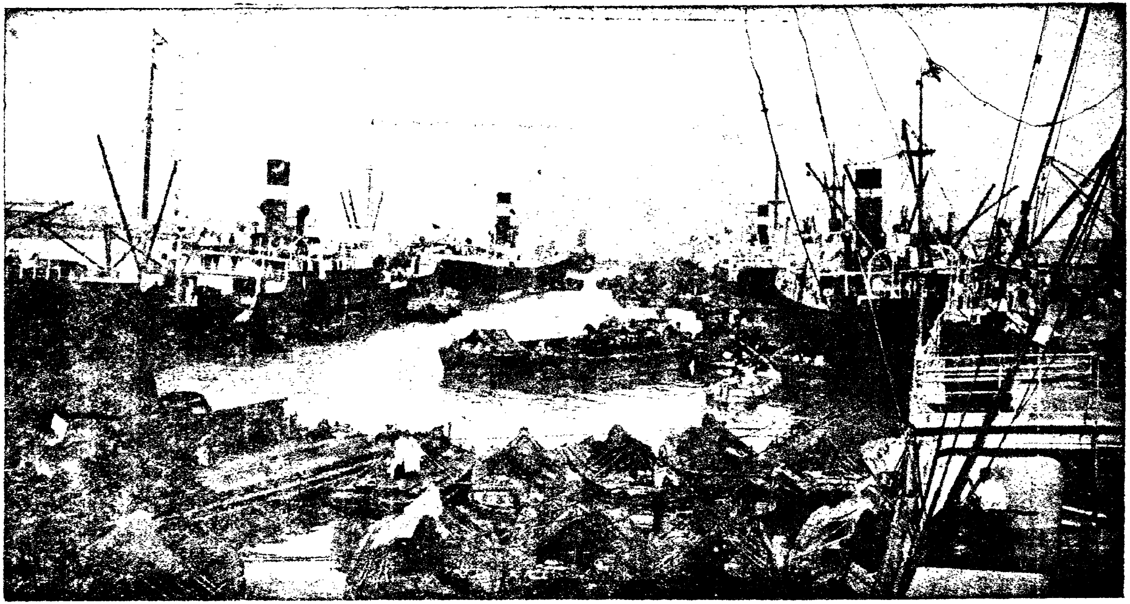
गौरमेंट हाउस

भारतवर्ष में अपने ढंग का यह एक मात्र भवन है। यह भवन प्राचीन कलकत्ता तथा आधुनिक कलकत्ता के बीच में स्थित है। इसकी भूमि के चारों ओर श्वेत लोह-रेलिंग तथा वृक्षों की पंक्ति है। पूर्व तथा पश्चिम

दोनों ओर दो, दो प्रवेश द्वार है जिन पर बाघों की मुर्तियां बनी हैं। प्रधान प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है जिसमें चार वर्गाकार स्तम्भ हैं। यहीं पर विज़टर्स बुक रक्खी रहती है जिसमें दर्शक गण अपना हस्ताक्षर किया करते हैं। उत्तर की ओर १६११ ई० में एक छठां द्वार बना दिया गया है।

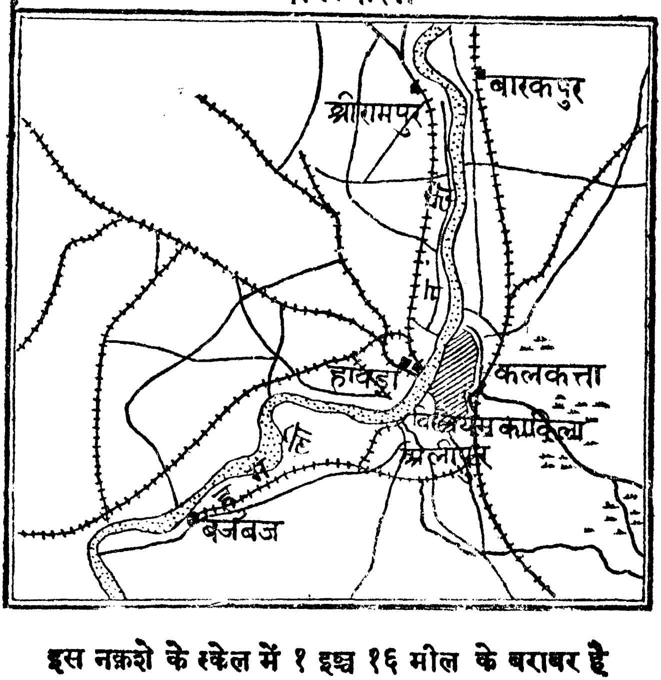
इस गौरमेंट भवन को लार्ड वेलज़्ली ने बनवाया था और इसकी नींव ५ फरवरी १७६६ ई० को डाली गई थी। इसके बनवाने में साढ़े तेरह लाख रुपये खर्च हुये थे। इसके अतिरिक्त ५० हज़ार रुपये का फरनीचर लगाया गया था। २६ जनवरी सन् १८०१ ई० को वेलेजली ने इसे खोला था। ऊपरी भाग में शाही कमरा बना है जहां भारतीय वाइसरायों का स्वागत होता है। इस कमरे में जाने के लिये सुन्दर सीढ़ी मार्ग बना है। भोजन तथा सरकारी निमंत्रण वाले कमरे देखने योग्य हैं। भवन, तस्वीरों तथा मूल्यवान वस्तुओं से सजाया हुआ है।

इसके मसनद वाले कमरे के सामने एक वृत्ताकार बरामदा बना है। इस कमरे के नाम टीपू सुल्तान का



कलकत्ता के किदरपुर डाक्स (जहाजी घाट)

कलकत्ता



इस नक़्शे के स्केल में १ इञ्च १६ मील के बराबर है

मसनद रक्खा गया है, क्योंकि कमरा टीपू के मसनद के रूप का ही बनाया गया है। जब वेलेज़ली ने श्रंगापट्टम की विजय की और टीपू मारा गया तो उसकी सुन्दर मसनद वेलेज़ली उठा लाया था। स्मृति के रूप में केवल बैठने वाला भाग निकाल कर मसनद वाले कमरे में रक्खा गया। शेष इङ्गलैंड भेज दिया गया था। टीपू सुल्तान की मसनद बड़ी सुन्दर तथा बहुमूल्य थी। सोना, मणि, हीरे, जवाहिरात से वह परिपूर्ण थी। मसनद पर चढ़ने के लिये चांदी की जड़ाऊ सीढ़ी बनी थी। मसनद भूमि से चार फुट ऊँची थी पिछले भाग में स्वर्ण रूपी बाघ था। मसनद की छतरी काली मज़बूत लकड़ी की बनी थी जिस पर सोने की मोटी चादर मढ़ी थी। साथ ही साथ सोने तथा मोती की मालाएँ जड़ीं थीं। छतरी के ऊपर मणियों का एक पक्षी बना था जिसकी पूँछ फैली थी और उसमें भांति भांति के हीरे जवाहिरात जड़े थे।

सरकारी भवन के उत्तरी-पूर्वी भाग में कौंसिल भवन है। यहां वाइसराय तथा गवरनर-जनरलों की मूर्तियां तथा तसवीरें हैं। प्रथम फ़र्श पर हरा ड्राइङ्ग रूप

है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग में गवरनर साहब का कमरा है। उत्तरी-पश्चिमी भाग सरकारी मेहमानों के लिये सुरक्षित रहता है।

प्रधान भवन का दूसरा फर्श भी तीन प्रधान भागों में विभाजित है। प्रथम दो बाल-रूम हैं। तीसरा सुन्दर सजावट वाला ड्राइङ्ग रूम है। सभी कमरों का फर्श ठाक लकड़ी का बना है। उत्तरी बाल-रूम में महारानी विक्टोरिया की तस्वीर है।

उत्तरी-पश्चिमी भाग के दूसरे फर्श के कमरे गवरनर साहब के निजी प्रयोग के हेतु हैं शेष भागों में मेहमानों के लिये जगह है।

प्रधान भवन में कौंसिल चैम्बर के अतिरिक्त पब्लिक के लिये कमरे बने हैं। यहां सुन्दर गैलरियां बनी हैं। कमरे ऐसी युक्ति से बनाए गये हैं कि चाहे जिस ओर से वायु चल रही हो हाल में होकर वायु के झोंके जाते हैं।

गौरमेंट भवन की भूमि में विभिन्न स्थानों से लाई गई तोपों का एक बड़ा जमघट है।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल २।)
२—भूतत्व १॥)
३—भूगोल एटलस १॥)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति १)
५—मिडिल भूगोल भाग १–४ मूल्य प्रत्येक भाग ।॥)
६—हमारा देश ॥=)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण) १।)
८—हमारी दुनिया ॥)
९—देश निर्माता ॥)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग ।)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग ।)
१२—जातियों का कोष ॥)
१३—अनोखी दुनिया ।॥)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस १)
१५—संसार-शासन २।)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण) १।)
१७—स्पेन-अंक १)
१८—ईरान-अंक १)
१९—चीन-अंक १)
२०—चीन-एटलस ॥)
२१—टर्की १)
२२—अफ़ग़ानिस्तान १)
२३—भुवनकोष १)
२४—एबीसीनिया ।॥)
२५—गंगा-अंक १)
२६—गंगा-एटलस ॥)
२७—देशी राज्य-अंक २॥)
२८—पशु-पक्षी-अंक १)
२९—महासमर-अंक १।)
३०—महासमर एटलस ॥)
३१—सचित्र भौगोलिक कहानियां ॥)
३२—पशु-परिचय ॥)
३३—प्राचीन जीवन ॥)
३४—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन) ३)
३५—मेरी पोथी ॥=)
३६—आसाम-अंक १)
३७—द्वितीय महासमर-परिचय १॥)
३८—संयुक्त प्रांत-अंक ३॥)
३९—महासमर दैनन्दिनी डायरी २)
४०—भारतीय भाषाएँ १)
४१—नागरिक दर्शन ॥=)
४२—मेरी पोथी ॥=)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय ककरहाघाट इलाहाबाद ।